अनुक्रमणिका

प्राक्कथन 7-10

प्रथम अध्याय : **विषय-प्रवेश** 11-21

राजस्थान की भौगोलिक, ऐतिहासिक-सांस्कृतिक व लोक-साहित्यिक पूर्व पीठिका

द्वितीय अध्याय : **राजस्थानी लोक-साहित्य एवं भारत-गाथाएं-सैद्धान्तिक विवेचन** 22-83

'लोक' की भारतीय ग्रंथों में व्याख्या। 'लोक ' आधुनिक पारिभाषिक परिप्रेक्ष्य में। लोक-साहित्य की व्याख्या। 'लोक-वार्ता', 'लोक-साहित्य', 'लोक संस्कृति'। राजस्थानी लोक-साहित्य। राजस्थानी लोक-गीत। राजस्थानी लोक-गीतों का वर्गीकरण। राजस्थानी लोक-कथाएं। राजस्थानी लोक-कथाओं का वर्गीकरण। राजस्थानी लोक-कथाओं की विशेषताएं। राजस्थानी लोक-नाट्य। राजस्थानी लोक-नाट्यों के प्रकार। राजस्थानी लोक-नाट्यों की विशेषताएं। राजस्थानी लोकोक्ति-साहित्य। राजस्थानी कहावतें। राजस्थानी मुहावरे। राजस्थानी पहेलियां। राजस्थानी पहेलियों का वर्गीकरण। राजस्थानी लोक-गाथाएं। लोक-साहित्य में लोक-गाथा का अस्तित्व। लोक-गाथा-पारिभाषिक विवेचन। बैलेड और लोक-गाथा। लोक-गाथाओं के विविध रूप। राजस्थानी लोक-गाथाओं का वर्गीकरण। गोगाजी, गलालेंग, ढोला-मारू, आभल-खींवजी। राजस्थान की 'भारत' शैली की लोक-गाथाएं। 'भारत' शब्द की व्याख्या। 'भारत' शब्द का वास्तविक तात्पर्य। 'भारत'-पारिभाषिक एवं स्वरूपगत व्याख्या। 'भारत' के अन्य प्रचलित नाम। विभिन्न प्रचलित 'भारतों' के नाम।

तृतीय अध्याय : **'भारतों का सामान्य परिचय** 84-121

कथा-वस्तु-काळा-गोरा रौ भारत। देवनारायण रौ भारत। लोक देवता तेजाजी-भारत। अंबाव रौ भारत। ताखाजी रौ भारत। पांडवां रौ भारत। नौरता रौ भारत। 'भारतों' में आए पात्र एवं स्थान।

चतुर्थ अध्याय : **'भारत' साहित्यिक अनुशीलन** 122-158

'भारतों' का भाव पक्ष। प्रतिपाद्य-काळा-गौरा रौ भारत। देवनारायण रौ भारत। लोक देवता तेजाजी-भारत। ताखाजी रौ भारत। अंबाव रौ भारत।

पांडवां रौ भारत। नौरता रौ भारत। मार्मिक प्रसंग। रस योजना, प्रकृति चित्रण, 'भारतों' का कला पक्ष, अलंकार योजना, छन्द योजना, मुहावरे, शैली, भाषा, लोक-कथन, कथानक रूढ़ियां, लोक प्रसिद्ध संख्याएं।

पंचम-अध्याय : **'भारत' सांस्कृतिक वैभव** 159-181
वेशभूषा, आभूषण, खान-पान, रस्म-रिवाज, प्रथाएं, मर्यादाएं, परम्पराएं, मनौती, पूजा-पाठ, परचा देना, त्यौहार, लोक-विश्वास, मनोरंजन, शकुन-अपशकुन, मन्त्र-तन्त्र, लोक-वाद्य, 'भारतों' में वीर संस्कृति का अंकन।

षष्ठ अध्याय : **'भारत'-प्रस्तुतीकरण** 182-187
देशकाल, जनमानस की उत्सुकता, छाया आना (देवी-देवताओं का भाव लाना), अनुष्ठान, मंच, भारत-गायकी में प्रयुक्त वाद्य-ढाक, थाली, भारत-गायक-निवास स्थान, वेशभूषा, खान-पान, भारत-गायकों का समाज में स्थान।

सप्तम अध्याय : **'भारत'-उपसंहार** 188-192
'भारतों' का धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, लोक-साहित्यिक एवं संगीत की दृष्टि से महत्त्व।

परिशिष्ट-1 : **देवनारायण से सम्बन्धित कतिपय प्राचीन स्थल** 193-200

परिशिष्ट-2 : **लोक देवी-देवताओं से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट जानकारियां** 201-204
बड़ल्या हींदवा की नौ लाख देवियां। विविध शक्ति देवियां। विविध रोगों की प्रतीक देवियां। देवी-देवताओं के भोपे। 'भारत' गायकी की पूर्व पीठिका। भावी वर्ष की भविष्यवाणियां।

परिशिष्ट-3 : **लोक-देवता तेजाजी सम्बन्धी गीत** 205-209

परिशिष्ट-4 : **लोक देवता भैरूं सम्बन्धी गीत** 210-222

परिशिष्ट-5 : **देवी-देवताओं, योगिनियों एवं संस्कारों की संख्यात्मक नामावलियां** 223-225
चौसठ भैरव।चौसठ योगिनियां, आठ विशिष्ट देवियां, ज्योतिष शास्त्रानुसार आठ देवियां, नव दुर्गा, सोलह संस्कार।

परिशिष्ट-6 : **नवरात्र (नौरता) का माहात्म्य एवं कथा** 226-228

संदर्भ ग्रंथ सूची 229-232